।। ओ३म्।।

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला –

भाग-१

ईश्वर-जीव प्रकृति

(सामान्य प्रश्नोत्तर)

लेखक :

आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य दर्शनाचार्य

संयोजक :

वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य

सुजानगढ़, कोलकाता, रायपुर, सिलीगुड़ी

(कुलपति-गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा)

सम्पादक :

आचार्य राहुलदेव शास्त्री व्याकरणाचार्य

(आर्य समाज बड़ाबाजार, कोलकाता)

इस पुस्तिका का विमोचन स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक (मुख्याधिष्ठाता -गुरुकुल होशंगाबाद) के कर-कमलों द्वारा आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम्, होशंगाबाद के शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर कार्तिक शुक्ल दशमी वि. सं. २०६८ तदनुसार ५ नवम्बर २०११ को गुरुकुल के पवित्र स्थली में सम्पन्न हुआ।

सम्पादकीय

ईश्वर-जीव प्रकृति तीन अनादि तत्व हैं। ये तीनों कभी उत्पन्न नहीं होते, न ही नष्ट होते हैं। इन तीनों की उत्पत्ति का कोई कारण नहीं है। इनमें से ईश्वर सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ, प्रकृति अज्ञ है। इस जगत के निर्माण में ईश्वर निमित्त कारण है, जीव साधारण कारण है और प्रकृति उपादान कारण है। ईश्वर एक है किन्तु उसके नाम अनेक यथा–ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अग्नि, वरुण, इन्द्र इत्यादि। उसका मुख्य नाम ओ३म् है। ईश्वर को आँखों से नहीं देखा जा सकता उसको हृदय में अनुभव किया जाता है। **जीव**-जीव एक देशी है, अल्प शक्तिवाला है, कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जाता है, किन्तु उन योनियों में मनुष्य योनि सर्वश्रेष्ठ है, जिसको पाकर जीवात्मा ईश्वर की भक्ति प्रार्थना, उपासना कर सकता है। जीवात्मा असंख्य है, किन्तु ईश्वर की दृष्टि में गिनती में है। **प्रकृति**-प्रकृति जड़ है। बिना बनाये बनती बिगड़ती नही है। प्रकृति का और कोई कारण नहीं है। प्रकृति की पूजा उपासना मनुष्य को अन्धकार की ओर ले जाती है। ईश्वर साध्य है, जीव साधक है और प्रकृति (जगत) साधन है।

इस ईश्वर-जीव प्रकृति नामक पुस्तिका में श्रद्धेय आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से ईश्वर-जीव प्रकृति को समझाने का सबसे सुन्दर सरलतम बुद्धिगम्य नुस्खा तैयार किया है। जिससे जनसाधारण भी इससे लाभ उठा सकता है। आचार्य जी आर्य जगत की असाधारण विभूति हैं। आपका कार्य प्रचार-प्रसार की शैली अनूठी है। आर्य शिरोमणि योगीराज पूज्यपाद स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की छत्रछाया में आपका निर्माण हुआ है। इतने छोटे से शब्दों में आपका जीवन और कार्यों को बांधना मेरे लिए लंगड़े व्यक्ति के पर्वत लांघने के समान कार्य है। आप भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में जाकर वैदिक धर्म का विशेष रूप से प्रचार-प्रसार कर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को चरितार्थ कर रहे हैं। आपने अब तक अनेक

महत्वपूर्ण कार्यों के साथ-साथ पुस्तक लेखन एवं प्रकाशन का कार्य करके ईश्वर के सच्चे स्वरूप एवं अष्टांग योग का प्रचार किया है। ईश्वर-जीव प्रकृति यह पुस्तिका इन तीन तत्वों को समझने-समझाने में जनमानस के लिए लाभदायक होगी। इस महनीय कार्य के लिए बहुत साधुवाद। इसके साथ ही अनेक गुरुकुलों एवं संस्थाओं के संरक्षक, ट्रस्टी, कुलपिता, दानवीर, प्रेरक पुरुष वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य जी ने वेद प्रचारार्थ गुरुकुल होशंगाबाद की शताब्दी समारोह पर अपनी धर्मपत्नी की पुण्य स्मृति में वानप्रस्थ गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला प्रकाशित कर अति उत्तम कार्य किया है। एतदर्थ इनको भी साधुवाद।

अन्त में इस महायज्ञ में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से अपना सहयोग, आशीर्वाद एवं परामर्श प्रदान करने वाले सभी महानुभावों का मैं हृदय से धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता हूँ। इसी श्रद्धा और विश्वास के साथ–

विद्वदनुचरः

आचार्य राहुलदेव शास्त्री

(आर्य समाज बड़ाबाजार, कोलकाता)

ईश्वर

प्रश्न : ईश्वर किसे कहते हैं?

उत्तर : एक ऐसी वस्तु जो सब जगह विद्यमान है, चेतन है, निराकार है, अनन्तज्ञान, अनन्तबल, अनन्त आनन्द, न्याय, दया आदि गुण से युक्त है उसका नाम ईश्वर है।

प्रश्न : ईश्वर का कोई रूप, रंग, भार, आकार, आदि है या नहीं?

उत्तर : ईश्वर में ये गुण नहीं होते। इसी कारण ईश्वर को निर्गुण भी कहते हैं।

प्रश्न : संसार को ईश्वर बनाता है या जीव बनाते हैं या अपने आप बन जाता है।

उत्तर : ईश्वर बनाता है। जीवों के पास इतना ज्ञान व सामर्थ्य नहीं है कि वे संसार को बना सकें। प्रकृति ज्ञानरहित तथा स्वयं क्रिया रहित होने से स्वयं संसार के रूप में नहीं आ सकती।

प्रश्न : ईश्वर से हमारे क्या क्या सम्बन्ध हैं?

उत्तर : ईश्वर हमारा माता, पिता, गुरु, राजा, स्वामी, उपास्य आदि है। और हम उसके पुत्र, शिष्य, प्रजा, सेवक, उपासक आदि हैं।

प्रश्न : ईश्वर जीवों से क्या चाहता है?

उत्तर : ईश्वर चाहता है कि जीव उसकी आज्ञा का पालन करके संसार में सुखी रहें व मुक्तिपद को प्राप्त करें।

प्रश्न : ईश्वर की आज्ञा क्या है, यह कैसे पता चलता है?

उत्तर : वेदों के पढ़ने से और ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावों को जानने से उसकी आज्ञाओं का पता लगा सकते हैं।

प्रश्न : ईश्वर और आत्मा में क्या समानता है?

उत्तर : ईश्वर और आत्मा में यह समानता है कि दोनों ही चेतन, पवित्र, अविनाशी, अनादि, निराकार हैं।

प्रश्न : ईश्वर और आत्मा में क्या भेद है?

उत्तर : ईश्वर सर्वज्ञ है, आत्मा अल्पज्ञ हैं। ईश्वर के पास अपना उत्कृष्ट सुख है आत्मा के पास सुख नहीं है वह सुख लेने के लिए ईश्वर के पास या संसार के पदार्थों में जाता है।

प्रश्न : ईश्वर का मुख्य व निज नाम क्या है?

उत्तर : 'ओ३म्' यह परमात्मा का प्रधान निज नाम है। जैसे वेद में भी आया है "ओ३म् क्रतो स्मर"।

प्रश्न : ईश्वर के मुख्य कार्य कौन कौन से हैं?

उत्तर : ईश्वर के मुख्य रूप से ५ कार्य हैं- (१) सृष्टि को बनाना, (२) पालन करना, (३) संहार करना, (४) जीवों के कर्मों का फल देना, (५) वेदों का ज्ञान देना।

प्रश्न : प्रलय में ईश्वर कुछ करता है या सो जाता है?

उत्तर : प्रलय समय में ईश्वर मुक्तात्माओं को आनन्द भुगाता है।

प्रश्न : ईश्वर का ज्ञान सदा एक सा रहता है या घटता बढ़ता है?

उत्तर : ईश्वर का ज्ञान सदा एकरस रहता है अर्थात् घटता बढ़ता नहीं है तथा वह असत्य भी नहीं होता।

प्रश्न : संसार को किसने धारण किया हुआ है?

उत्तर : ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से सब लोक-लोकान्तरों को (संसार को) धारण कर रखा है।

प्रश्न : ईश्वर के सुख व सांसारिक पदार्थों के सुख में कोई अन्तर है या नहीं?

उत्तर : ईश्वर के सुख व सांसारिक पदार्थों के सुख में अन्तर है। ईश्वर का आनन्द स्थायी व पूर्ण तृप्ति देने वाला है जबकि सांसारिक पदार्थों का सुख क्षणिक व दुःखमिश्रित है।

प्रश्न : ईश्वर व जीवों के बीच कोई दूरी है या नहीं?

उत्तर : काल व स्थान की दृष्टि से जीव, ईश्वर से दूर नहीं हैं। ईश्वर हर समय, हर स्थान पर उनके साथ रहता है। परन्तु ज्ञान की दृष्टि से जीव

ईश्वर से दूर हो जाते हैं। जो ईश्वर को नहीं जानते, मानते, व उसकी भक्ति नहीं करते वे जीव, ईश्वर से दूर हैं।

प्रश्न : ईश्वर की क्या विशेषता है?

उत्तर : ईश्वर सदा अपने आनन्द में मग्न रहता है। ईश्वर में कोई न्यूनता, कोई दोष नहीं है। उसे किसी भौतिक पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न : ईश्वर किस किस का स्वामी है?

उत्तर : ईश्वर प्रकृति, जीवों, संसार व मोक्ष का स्वामी है।

प्रश्न : क्या जीव अपने कर्मों का फल पूर्ण रूप से स्वयं ले सकते हैं?

उत्तर : नहीं, कर्मों का फल ईश्वर के अधीन है। वह अपनी व्यवस्था से कर्मफल देता है।

प्रश्न : क्या भक्त अपने सामर्थ्य से ईश्वर का दर्शन (अनुभूति) कर सकता है?

उत्तर : नहीं, जब तक ईश्वर से विशेष ज्ञान विज्ञान न मिले व ईश्वर की कृपा न हो तब तक भक्त उसका दर्शन (अनुभूति) नहीं कर सकता।

प्रश्न : जब परमेश्वर जन्म नहीं लेता तब निर्गुण व जब जन्म लेता है तब सगुण कहलाता है। क्या यह बात ठीक है?

उत्तर : नहीं, सगुण व निर्गुण का अर्थ भिन्न ही है। सर्वज्ञता, सर्वव्यापकत्व आदि गुणों से सहित होने से उसे सगुण व जड़त्व, मूर्खत्व, राग-द्वेष आदि गुणों से रहित होने से ईश्वर को निर्गुण कहते हैं।

प्रश्न : ईश्वर को जानने के पश्चात् योगी को क्या अनुभूति होती है?

उत्तर : ईश्वर को जानने के पश्चात् योगी को यह अनुभूति होती है कि जो जानना था सो जान लिया, जो पाना था सो पा लिया, अब कुछ भी जानना या प्राप्त करना बाकी नहीं रहा।

प्रश्न : मनुष्य जन्म पाकर करने योग्य सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य कौन सा है?

उत्तर : ईश्वर को समझना व उसकी अनुभूति करना (प्रत्यक्ष करना) सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रश्न : क्या ईश्वर विरक्त है?

उत्तर : नहीं, जो प्राप्त हुए पदार्थ को छोड़ दे उसे विरक्त कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापक होने से किसी पदार्थ को नहीं छोड़ता इस दृष्टि से वह विरक्त नहीं हैं।

प्रश्न : क्या ईश्वर जीवों में या सांसारिक पदार्थों में राग रखता है?

उत्तर : नहीं, राग अपने से भिन्न उत्तम पदार्थ में होता है। ईश्वर से कोई भी जीव या सांसारिक पदार्थ उत्तम नहीं है। अतः ईश्वर किसी से भी राग नहीं रखता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर इस संसार के बाहर भी है?

उत्तर : हाँ, है। अपितु ईश्वर इतना महान् है कि यह सारी सृष्टि तो उसके सामने परमाणु के तुल्य भी नहीं है।

प्रश्न : क्या ईश्वर हमें प्रतिदिन शिक्षा देता है?

उत्तर : जी, हाँ। जीव जब बुरे या अच्छे काम करने की इच्छा करता है तो अन्दर से भय, लज्जा, शंका या आनन्द, उत्साह, निर्भयता प्राप्त होते हैं। यह अन्तर्यामी ईश्वर की शिक्षा है जिससे जीव बुरे व अच्छे कर्मों को जान सकता है।

प्रश्न : क्या संसार में कभी ईश्वर का अभाव होता है?

उत्तर : नहीं, संसार का तो प्रलय में अभाव हो जाता है परन्तु उस समय भी ईश्वर व जीव व प्रकृति रहते हैं उनका तीनों कालों में अस्तित्व रहता है।

प्रश्न : मनुष्य संसार की हानि करते हैं तो क्या ऐसे में ईश्वर उन्हें देखकर दुःखी होता है?

उत्तर : नहीं। परन्तु जो पापी हैं, उन्हें अच्छा नहीं मानता व जो पुण्यात्मा हैं उन्हें अच्छा मानता है व उन्हें भय शंका लज्जा आदि के रूप में दण्ड देता है उन्हें उत्साह, प्रेरणा भी देता है।

प्रश्न : ईश्वर का दर्शन कौन करते हैं?

उत्तर : वेद आदि शास्त्रों के विद्वान, धर्मात्मा व योगी मनुष्य ही ईश्वर का साक्षात्कार कर सकते हैं।

प्रश्न : क्या ईश्वर शरीर धारण करता या रोगी, बूढ़ा होता है?

उत्तर : नहीं, ईश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता है। न तो रोगी या बूढ़ा होता है वह तो बिना शरीर के ही अपने सब कार्य अपने सामर्थ्य से कर सकता है।

प्रश्न : राम, कृष्ण, शिव आदि ईश्वर की भक्ति करते थे या नहीं?

उत्तर : हाँ, राम, कृष्ण, शिव आदि भी ईश्वर की भक्ति करते थे।

प्रश्न : ईश्वर जीव को पाप करने की प्रेरणा देता है या नहीं?

उत्तर : नहीं, वह पवित्र है अतः न स्वयं पाप करता है न ही पाप करने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न : किसी व्यक्ति का जीवन बिना ईश्वर को माने बिना उसकी उपासना किए अच्छी प्रकार से चल रहा है तो फिर ईश्वर को मानने व उसकी उपासना करने की आवश्यकता, अपेक्षा ही क्या है?

उत्तर : ईश्वर की उपासना करने से विशेष ज्ञान, बल, आनन्द, शान्ति आदि गुणों की प्राप्ति होती है। इसलिए ईश्वर की उपासना अवश्य करनी चाहिए।

प्रश्न : क्या ईश्वर अपने भक्त के पापों, बुरे कर्मों के दुःख रूप फलों को क्षमा करता है यदि नहीं करता तो फिर उसकी भक्ति करने का क्या लाभ है?

उत्तर : ईश्वर पापों के फल देने में कभी भी क्षमा नहीं करता है ईश्वर की भक्ति करने से भविष्य में बुरे कर्म न करने की प्रेरणा ईश्वर से मिलती है। तथा घोर दुःख, कष्ट, विपत्ति के आने पर भी इसे सहन करने की शक्ति मिलती है।

प्रश्न : संसार को बनाने, उसे चलाने से ईश्वर को क्या लाभ होता है? यदि कोई लाभ नहीं होता है तो फिर क्यों बनाता है, चलाता है?

उत्तर : ईश्वर को संसार को बनाने व चलाने से स्वयं को कोई लाभ नहीं होता फिर भी ईश्वर परोपकारी है, जीवों को सुख प्रदान करने के लिए संसार बनाता है, चलाता है।

प्रश्न : ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान् है तथा जीवों का हितैषी है तो फिर

वह पापियों को (बुरे व्यक्तियों को) पाप करने से रोकता क्यों नहीं है?

उत्तर : जीव कर्म करने में स्वतंत्र है इसलिए ईश्वर उसे पाप करने से हाथ पकड़कर तो नहीं रोकता किन्तु मन में भय, शंका, लज्जा आदि उत्पन्न करके संकेत अवश्य करता है यह उसका रोकना कहा जा सकता है। यह इसकी सीमा है।

प्रश्न : ईश्वर न्यायकारी है तो संसार में किसी को अंधा, लूला, लंगड़ा, कुरूप, निर्धन, निर्बल, निर्बुद्धि क्यों बनाता है? और किसी को सुन्दर, पूर्णांग, धनवान, बलवान, विद्वान् क्यों बनाता है?

उत्तर : ईश्वर अपनी इच्छा से किसी को अच्छा या बुरा फल नहीं देता किन्तु जीवों के कर्मों के अनुरूप फल देता है।

प्रश्न : ईश्वर को न्यायकारी तथा दयालु दोनों गुणों वाला बताया गया है जबकि ये दोनों गुण एक दूसरे के विरुद्ध हैं। यदि न्याय करे तो दण्ड मिले, यदि दया करे तो अन्यायी बन जाए? इसका समाधान क्या है?

उत्तर : न्याय तथा दया शब्दों में कोई विरोध नहीं है। बुरे व्यक्ति को दण्ड देकर ईश्वर न्यायकारी बनता है और बन्धन में डालकर भविष्य में पाप करने से रोकता है अतः दयालु भी है।

प्रश्न : क्या कुछ ऐसे गुण भी हैं जो ईश्वर में न हों?

उत्तर : हाँ हैं, जैसे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, भार आदि ये गुण प्रकृति में हैं, किन्तु ईश्वर में नहीं हैं और जीव में भी नहीं हैं।

प्रश्न : ईश्वर कोई वस्तु/द्रव्य/पदार्थ/चीज है?

उत्तर : हाँ, ईश्वर एक द्रव्य है, पदार्थ है, वस्तु है क्योंकि उसमें अनेक गुण हैं और वह कर्म भी करता है। वैदिक सिद्धान्त में वस्तु उसको कहा जाता है जिसमें गुण, रहते हों।

प्रश्न : ईश्वर को सर्वव्यापक बताया गया है तो कागज के जलने, कपड़े के फटने, रोटी के चबाने, लकड़ी के छीलने, लोहे के पीटने पर वह भी जलता, फटता, चबाया, छीलता, पीटा जाता होगा?

उत्तर : नहीं, क्योंकि ईश्वर जलने, फटने, कटने वाली जड़ वस्तुओं से

अलग है। उनके जलने, फटने, कटने पर भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि वह जड़ नहीं किन्तु चेतन है।

प्रश्न : ईश्वर पापों को क्षमा करता है? यदि नहीं तो क्यों? क्षमा कर दे तो क्या हानि होगी?

उत्तर : यदि ईश्वर मनुष्यों के पापों को क्षमा कर दे तो वह अन्यायकारी बन जाये, साथ ही संसार में पाप कर्म भी बढ़ जाये, इसलिए वह पापों को क्षमा नहीं करता है।

प्रश्न : ईश्वर कर्मों का फल तत्काल क्यों नहीं देता? बाद में देरी से देवे तो मनुष्यों के मन में कर्मफल के विषय में शंका/अनास्था/अश्रद्धा/अविश्वास उत्पन्न होते हैं?

उत्तर : ईश्वर अपने नियमानुसार समय पर ही कर्मों का फल देता है, पूर्व नहीं, जैसे कि फल, फूल, अन्न आदि समय पर उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न : ईश्वर की उपासना करने वाले आस्तिक व्यक्ति संसार में दुःखी दीन, हीन, निर्बल, निर्धन, पराधीन देखे जाते हैं, जबकि नास्तिक व्यक्ति सुखी, सम्पन्न, बलवान, स्वतंत्र देखे जाते हैं, ऐसा क्यों?

उत्तर : ईश्वर की उपासना के साथ साथ आस्तिक व्यक्तियों को धन, बल, ज्ञान, स्वास्थ्य, सुरक्षा, स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए संकल्प, पुरुषार्थ, तपस्या भी करनी चाहिए, जो ऐसा नहीं करते हैं वे आस्तिक दुःखी होते हैं, अन्य नहीं।

प्रश्न : ईश्वर चेतन है तो ईंट, पत्थर, सोना, चांदी आदि जड़ पदार्थों में चेतनता (चलना, फिरना, हिलना, डुलना, इच्छा, प्रयत्न) आदि क्यों नहीं देखे जाते हैं?

उत्तर : ईंट पत्थर आदि जड़ पदार्थों में चेतन ईश्वर रहता है किन्तु ईंट, पत्थर आदि में जीवात्मा न होने से वे चलते-फिरते नहीं हैं, ईश्वर अपनी चेतनता को अपने अधिकार में रखता है इसलिए जड़ पदार्थों में चलना फिरना आदि गति नहीं होती है।

प्रश्न : ईश्वर स्वयं न हिलता हुआ अन्यों (संसार के पदार्थों को) कैसे

हिलाता है?

उत्तर : ईश्वर में चुम्बकीय सी शक्ति है, इसी शक्ति से वह स्वयं न हिलता हुआ संसार के जड़ पदार्थों को हिला देता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर संसार में किसी स्थान विशेष में, किसी काल विशेष में, किसी समुदाय विशेष में, किसी जीव विशेष को उनका कल्याण करने के लिए और दुष्टों का नाश करने के लिए भेजता है?

उत्तर : नहीं, ईश्वर किसी स्थान, काल, समुदाय विशेष में किसी जीव विशेष को नहीं भेजता है। ऐसा करे तो वह सर्वहितकारी नहीं रहेगा, पक्षपाती, अन्यायकारी बन जायेगा।

प्रश्न : क्या ईश्वर जीवों के भविष्य की बातों को जानता है कि वह कब, कहाँ, किसके साथ क्या करेगा?

उत्तर : नहीं, ईश्वर जीवों के भविष्य की सब बातों को नहीं जानता है। हाँ, जीवों के मन में जो संकल्प/इच्छा आदि उत्पन्न होते हैं उनको तो जान लेता है।

प्रश्न : ईश्वर सर्वज्ञ है, आनन्द स्वरूप है तथा सर्वव्यापक है इसलिए वह सभी जीवों के अन्दर भी है तो फिर सब जीव ईश्वर के सम्पर्क के कारण सर्वज्ञ, आनन्द की अनुभूति क्यों नहीं करते हैं?

उत्तर : ईश्वर का आनन्द अपने अधिकार में है। वह जिसको योग्य/पात्र समझता है, उसे ही अपना आनन्द प्रदान करता है। अयोग्य को नहीं प्रदान करता है।

प्रश्न : ईश्वर सर्वव्यापक होने से शौचालय में विद्यमान मलमूत्र में भी उपस्थित है तो फिर उसे दुर्गन्ध की अनुभूति भी होती होगी?

उत्तर : ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वह मल आदि दुर्गन्ध का ज्ञान करते हुए भी उससे दुःखी या विचलित नहीं होता है। किन्तु अपने बल से उसे रोक देता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर सब कुछ कर सकता है? क्योंकि उसे सर्वशक्तिमान् कहा गया है?

उत्तर : ईश्वर सब कुछ नहीं कर सकता, अपने को मार नहीं सकता या अपने जैसा दूसरा ईश्वर नहीं बना सकता। सर्वशक्तिमान् का अर्थ है, हो सकने वाले कार्यों को ईश्वर अपनी ही शक्ति से पूर्ण कर लेता है, वह असंभव कार्यों को नहीं करता है। प्रकृति की सहायता लेकर कर सकता है, असंभव कार्यों को नहीं।

प्रश्न : क्या ईश्वर अपने भक्त उपासक के वश में भी हो जाता है? अर्थात् जैसा भक्त चाहे वैसा ईश्वर करे, ऐसा भी होता है?

उत्तर : नहीं, ईश्वर भक्त के वश में नहीं होता है। बल्कि भक्त ईश्वर के वश में रहना चाहता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर की भक्ति, प्रार्थना, ध्यान, उपासना किन्हीं विशेष मन्त्रों, सूत्रों, श्लोकों द्वारा ही की जा सकती है, अपनी भाषा में इच्छानुसार नहीं की जा सकती?

उत्तर : अपनी भाषा से भी की जा सकती है, किन्तु मन्त्र आदि के माध्यम से संक्षप में, सरलता से, उत्तम रीति से की जा सकती है।

प्रश्न : ईश्वर एक है किन्तु उसके रूप अनेक हैं क्या यह बात सत्य है? अर्थात् एक ही ईश्वर ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, देवी आदि अनेक रूपों वाला है?

उत्तर : ईश्वर के रूप (देवी देवता के रूप) अनेक नहीं हैं। वह तो अरूप, उ निराकार है, किन्तु गुण कर्म स्वभाव के अनुसार नाम तो अनेक हैं।

प्रश्न : एक की बजाए अनेक ईश्वर क्यों न मान लिये जाएँ? ऐसा करने से सभी मत पंथ संप्रदाय वाले भी संतुष्ट हो जायेंगे।

उत्तर : जब ईश्वर एक ही है तो अनेक मानना झूठ होगा। साथ ही इन अनेक ईश्वर वालों के परस्पर झगड़े होंगे कि मेरा ईश्वर बड़ा है, उसका छोटा है।

प्रश्न : ईश्वर की प्रार्थना उपासना करने से क्या-क्या लाभ होते हैं?

उत्तर : ईश्वर की उपासना करने से समाधि अवस्था में विशेष ज्ञान, बल, आनन्द, धैर्य, सहनशक्ति, उत्साह, पराक्रम, निष्कामता आदि गुणों की

प्राप्ति होती है। साथ ही मनुष्य, आत्मा का साक्षात्कार करता है तथा उसके अविद्या आदि दोष नष्ट होते हैं।

प्रश्न : क्या ईश्वर कर्मफल देने में अन्य जीवों की सहायता लेता है?

उत्तर : नहीं, ईश्वर कर्म फल देने में अन्य जीवों की सहायता नहीं लेता।

प्रश्न : क्या उपासना करने वाले व्यक्ति को ईश्वर वास्तव में दिखाई देता है?

उत्तर : दिखाई देता है अर्थात् उसको ईश्वर की अनुभूति होती है। जैसा ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, आनन्द स्वरूप, न्यायकारी, सर्वव्यापक आदि गुणों वाला है। वैसा ही उसे अनुभव में आता है। साथ ही ईश्वर के आनन्द की अनुभूति भी वह करता है। इसे ही दिखाई देना समझना चाहिए।

प्रश्न : ईश्वर अपने उपासकों की रक्षा कैसे करता है? उसकी रक्षा करने का तरीका, विधि, ढंग क्या है?

उत्तर : ईश्वर अपने उपासक को आपत्ति, कठिनाई, विरोध बाधा आदि प्रतिकूलता उपस्थित होने पर उत्साह, बल, ज्ञान, पराक्रम, धैर्य, सहनशक्ति आदि गुणों को प्रदान करके समस्याओं से दुःखी होने से बचाता है। यही उसकी रक्षा है।

प्रश्न : क्या ईश्वर अपनी ही इच्छा से किसी व्यक्ति विशेष को धन, बल, प्रतिष्ठा, सम्मान, सफलता, सुख देता है?

उत्तर : ईश्वर अपनी इच्छा से किसी व्यक्ति विशेष को धन, बल, प्रतिष्ठा, सम्मान, सफलता, सुख नहीं देता है। ऐसा करे तो वह अन्यायकारी हो जाये।

प्रश्न : किसी व्यक्ति ने ईश्वर का प्रत्यक्ष किया है, इस बात का पता कैसे लगाया जा सकता है?

उत्तर : जो व्यक्ति ईश्वर का प्रत्यक्ष करता है उसके जीवन, वाणी, व्यवहार में ईश्वरीय गुण अर्थात् आनन्द, शान्ति, निर्भीकता, सच्चाई, परोपकार, निष्पक्षता, निष्कामता आदि प्रतीत होते हैं। वह दुःखी, चिन्तित, रागी, द्वेषी, पक्षपाती नहीं बनता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर अपने भक्तों उपासकों से बातचीत भी करता है? शंका-समाधान करता है? निर्देश भी करता है? प्रेरणा देता है?

उत्तर : हाँ, ईश्वर समाधि अवस्था में अपने उपासकों से बातचीत भी करता है तथा उनकी शंकाओं का समाधान भी करता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर मकान, रोटी आदि बना सकता है?

उत्तर : हाँ, परन्तु ईश्वर ने वस्तुओं के निर्माण की सीमा निर्धारित कर रखी है इसलिए वह इन पदार्थों को नहीं बनाता। ये कार्य जीवों के कर्मों की सीमा के अन्तर्गत आते हैं।

प्रश्न : जब ईश्वर अनन्त है, उसे पूरा तो हम जान ही नहीं सकते, तो उसे जानने का प्रयत्न ही क्यों करें?

उत्तर : जैसे नदी का पूरा पानी हम नहीं पी सकते फिर भी अपनी आवश्यकतानुसार थोड़ा सा पानी हम नदी से लेकर पी लेते हैं। ठीक ऐसे ही ईश्वर को जितना जानने से मोक्ष हो जाए उतना तो अवश्य ही जानना चाहिए।

प्रश्न : ईश्वर दयालु कैसे है?

उत्तर : दयालु का अर्थ है दया के स्वभाव वाला। दया का अर्थ है दूसरे के हित, उन्नति, कल्याण और सुख चाहना। ईश्वर की सबसे बड़ी दया यह है कि उसने जीवों की उन्नति, सुख के लिए सृष्टि के उत्तम पदार्थ बनाकर दान में दे रखे हैं। ईश्वर की दया का एक स्वरूप यह भी है कि वह सहायता चाहने वाले पुरुषार्थी मनुष्य की सहायता करता है।

प्रश्न : क्या ईश्वर को उसके कर्मों का फल मिलता है?

उत्तर : जी हाँ, ईश्वर के कर्मों का फल यही है कि उसके कार्य पूर्ण हो जाते हैं, अटकते नहीं।

प्रश्न : क्या संसार में हिंसा, छल, कपट, भूकम्प आदि जो होते हैं वह ईश्वर कर रहा है?

उत्तर : नहीं, जीव स्वन्त्र हैं, उनके कारण भी अनेक अव्यवस्था, दुःख सृष्टि में फैलाये जाते हैं। पृथ्वी आदि पदार्थों में भी स्वभाव से परिवर्तन, टूट-फूट

आदि होती रहती है। यह ईश्वर की ओर से नहीं है।

प्रश्न : बालक के शरीर को माता-पिता बनाते हैं, ईश्वर नहीं। क्या यह बात ठीक है?

उत्तर : नहीं, यदि बालक का शरीर माता-पिता ने बनाया होता तो उन्हें शरीर की रचना का पूरा-पूरा ज्ञान होता परन्तु ऐसा नहीं होता। वैज्ञानिक भी आज तक मनुष्य शरीर को पूरा-पूरा नहीं जान पाए।

प्रश्न : ईश्वर शरीर धारण नहीं करता, इसमें वेद का क्या प्रमाण है?

उत्तर : यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के आठवें मन्त्र में ईश्वर क 'अकायम्' अर्थात् शरीर रहित कहा है।

प्रश्न : कहते हैं कि ब्रह्मा ने सृष्टि को उत्पन्न किया, विष्णु सृष्टि का पालन कर रहे हैं व महेश सृष्टि का संहार करते हैं। क्या यह बात ठीक है?

उत्तर : नहीं, ब्रह्मा, विष्णु और महेश एक ईश्वर के नाम हैं और वही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व संहार करते हैं।

जीवात्मा

प्रश्न : जीवात्मा किसे कहते हैं?

उत्तर : एक ऐसी वस्तु जो अत्यंत सूक्ष्म है, अत्यंत छोटी है, एक जगह रहने वाली है, जिसमें ज्ञान अर्थात् अनुभूति का गुण है, जिसमें रूप रंग, गंध, भार नहीं है, कभी नाश नहीं होता, जो सदा से है और सदा रहेगी, जो मनुष्य-पशु-पक्षी आदि का शरीर धारण करती है तथा कर्म करने में स्वतंत्र है उसे जीवात्मा कहते हैं।

प्रश्न : जीवात्मा के दुःखों का कारण क्या है?

उत्तर : जीवात्मा के दुःखों का कारण मिथ्या ज्ञान है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा स्थान घेरती है?

उत्तर : नहीं, जीवात्मा स्थान नहीं घेरती। एक सूई की नोक पर विश्व की सभी जीवात्माएँ आ सकती हैं।

प्रश्न : जीवात्मा की प्रलय में क्या स्थिति होती है। क्या उस समय उसमें ज्ञान होता है?

उत्तर : प्रलय अवस्था में बद्ध जीवात्माएँ मूर्छित अवस्था में रहती है। उसमें ज्ञान होता है परन्तु शरीर, मन आदि साधनों के अभाव से प्रकट नहीं होता।

प्रश्न : प्रलय काल में मुक्त आत्माएँ किस अवस्था में रहती हैं?

उत्तर : प्रलय काल में मुक्त आत्माएँ चेतन अवस्था में रहती हैं और ईश्वर के आनन्द में मग्न रहती हैं।

प्रश्न : जीवात्मा के पर्यायवाची शब्द क्या-क्या हैं?

उत्तर : आत्मा, जीव, इन्द्र, पुरुष, देही, उपेन्द्र, वैश्वानर आदि अनेक नाम वेद आदि शास्त्रों में आये हैं।

प्रश्न : क्या जीवात्मा अपनी इच्छा से दूसरे के शरीर में प्रवेश कर सकता है?

उत्तर : जीवात्मा अपनी इच्छा से दूसरे के शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता है।

प्रश्न : मुक्ति का समय कितना है?

उत्तर : ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष मुक्ति का समय है।

प्रश्न : जीवात्मा स्त्री है, पुरुष है या नपुंसक है?

उत्तर : जीवात्मा का कोई लिंग नहीं होता है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा, ईश्वर का अंश है?

उत्तर : नहीं, जीवात्मा ईश्वर का अंश नहीं है। ईश्वर अखण्ड है उसके अंश = टुकड़े नहीं होते हैं।

प्रश्न : क्या जीवात्मा का कोई भार, रूप, आकार, आदि है?

उत्तर : जीवात्मा में कोई भार, रूप, आकार आदि गुण नहीं होते।

प्रश्न : जीवात्मा की मुक्ति एक जन्म में होती है या अनेक जन्म में होती हैं?

उत्तर : जीवात्मा की मुक्ति एक जन्म में नहीं होती अपितु अनेक जन्मों में होती है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा मुक्ति में जाने के बाद पुनः संसार में वापस आता है?

उत्तर : जी हाँ, जीवात्मा मुक्ति में जाने के बाद पुनः शरीर धारण करने के लिए वापस आता है।

प्रश्न : जीवात्मा के लक्षण क्या हैं?

उत्तर : जीवात्मा के लक्षण इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान, सुख, दुःख की अनुभूति करना है।

प्रश्न : मेरा मन मानता नहीं, यह कथन ठीक है?

उत्तर : मेरा मन मानता नहीं, यह कथन ठीक नहीं है। जड़ मन को चलाने वाला चेतन जीवात्मा है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा कर्मों का फल स्वयं भी ले सकता है?

उत्तर : हाँ, जीवात्मा कुछ कर्मों का फल स्वयं भी ले सकता है जैसे चोरी का दण्ड भरकर। किंतु अपने सभी कर्मों का फल जीवात्मा स्वयं नहीं ले सकता है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा कर्म करते हुए थक जाता है?

उत्तर : नहीं, जीवात्मा कर्मों को करते हुए थकता नहीं है अपितु शरीर, इन्द्रियों का सामर्थ्य घट जाता है।

प्रश्न : जीवात्मा में कितनी स्वाभाविक शक्तियाँ हैं?

उत्तर : जीवात्मा में २४ स्वाभाविक शक्तियाँ हैं।

प्रश्न : शास्त्रों में आत्मा को जानना क्यों आवश्यक बताया गया है?

उत्तर : जीवात्मा के स्वरूप को जानने से शरीर, इन्द्रिय और मन पर अधिकार प्राप्त हो जाता है, परिणाम स्वरूप आत्मज्ञानी समस्त बुरे कामों से बचकर उत्तम कार्यों को ही करता है।

प्रश्न : जीवात्मा का स्वरूप (गुण, कर्म, स्वभाव, लम्बाई, चौड़ाई, परिमाण) क्या है?

उत्तर : जीवात्मा अणु स्वरूप, निराकार, अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान है, वह चेतन है और कर्म करने में स्वतंत्र है, बाल की नोंक के दश हजारवें भाग से भी सूक्ष्म है।

प्रश्न : जीवात्मा शरीर में कहाँ रहता है?

उत्तर : जीवात्मा मुख्य रूप से शरीर में स्थान विशेष जिसका नाम हृदय है, वहाँ रहता है किन्तु गौण रूप से नेत्र, कण्ठ इत्यादि स्थानों में भी वह निवास करता है।

प्रश्न : क्या, मनुष्य, पशु पक्षी, कीट पतंग आदि शरीरों में जीवात्मा भिन्न भिन्न होते हैं या एक ही प्रकार के होते हैं?

उत्तर : मनुष्य, पशु, पक्षी आदि कीट पतंग के शरीरों में भिन्न-भिन्न जीवात्माएँ नहीं हैं किन्तु एक ही प्रकार के जीवात्माएँ हैं, शरीरों का भेद है आत्माओं का भेद नहीं।

प्रश्न : जीवात्मा शरीर क्यों धारण करता है? कब से कर रहा है और कब तक करेगा?

उत्तर : जीवात्मा, अपने कर्मफल को भोगने और मोक्ष को प्राप्त करने के लिए शरीर को धारण करता है संसार के प्रारम्भ से यह शरीर धारण करता आया है और जब तक मोक्ष को प्राप्त नहीं करता है तब तक शरीर धारण करते रहता है।

प्रश्न : क्या मरने के बाद जीव, भूत, प्रेत, डाकन आदि भी बनकर भटकता है?

उत्तर : मरने के बाद जीव न तो भूत, प्रेत बनता है और न ही भटकता है। यह लोगों के अज्ञान के कारण बनी हुई मिथ्या मान्यता है।

प्रश्न : शरीर में जीवात्मा कब आता है?

उत्तर : जब गर्भ धारण होता है तभी जीवात्मा आ जाता है, अर्थात् जब रजवीर्य मिलते हैं तब।

प्रश्न : क्या जीव और ब्रह्म (ईश्वर) एक ही हैं? अथवा क्या 'आत्मा सो परमात्मा' यह मान्यता ठीक है?

उत्तर : जीव और ब्रह्म एक ही नहीं हैं अपितु दोनों अलग-अलग पदार्थ हैं जिनके गुण कर्म स्वभाव भी भिन्न-भिन्न हैं। अतः यह मान्यता ठीक नहीं हैं।

प्रश्न : क्या जीव ईश्वर बन सकता है?

उत्तर : जीव कभी भी ईश्वर नहीं बन सकता है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा एक वस्तु है?

उत्तर : हाँ, जीवात्मा एक चेतन वस्तु है, वैदिक दर्शनों में वस्तु उसको कहा गया है, जिसमें कुछ गुण कर्म, स्वभाव होते हों।

प्रश्न : क्या जीवात्मा शरीर को छोड़ने में और नये शरीर को धारण करने में स्वतंत्र है?

उत्तर : जीवात्मा को नये शरीर को धारण करने में स्वतन्त्र नहीं है अपितु ईश्वर के अधीन है। जब एक शरीर में जीवात्मा का भोग पूरा हो जाता है तो ईश्वर जीवात्मा को निकाल लेता है और उसे नया शरीर प्रदान करता है।

प्रश्न : निराकार अणु स्वरूप वाला जीवात्मा इतने बड़े शरीरों को कैसे चलाता है?

उत्तर : जैसे बिजली बड़े-बड़े यंत्रों को चला देती है ऐसे ही निराकार होते हुए भी जीवात्मा अपनी प्रयत्न रूपी चुंबकीय शक्ति से शरीरों को चला देता है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा अपनी इच्छा से दूसरे के शरीर में प्रवेश कर सकता है?

उत्तर : जीवात्मा अपनी इच्छा से दूसरे के शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता है यह कार्य उसकी शक्ति और सामर्थ्य से बाहर का है।

प्रश्न : शरीर छोड़ने के बाद (मृत्यु पश्चात्) कितने समय में जीवात्मा दूसरा शरीर धारण करता है?

उत्तर : जीवात्मा शरीर छोड़ने के बाद (मृत्यु पश्चात्) ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार कुछ पलों में शीघ्र ही दूसरे शरीर को धारण कर लेता है। यह सामान्य नियम है।

प्रश्न : क्या इस नियम का कोई अपवाद भी होता है?

उत्तर : जी हाँ, इस नियम का अपवाद होता है। मृत्यु पश्चात् जब जीवात्मा एक शरीर को छोड़ देता है लेकिन अगला शरीर प्राप्त करने के लिए अपने

कर्मानुसार माता का गर्भ उपलब्ध नहीं होता है तो कुछ समय तक ईश्वर की व्यवस्था में रहता है। पश्चात् अनुकूल माता-पिता मिलने से ईश्वर की व्यवस्थानुसार उनके यहाँ जन्म लेता है।

प्रश्न : जीवात्मा की मुक्ति क्या है और कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर : प्रकृति के बंधन से छूट जाने और ईश्वर के परम आनन्द को प्राप्त करने का नाम मुक्ति है। यह मुक्ति वेदादि शास्त्रों में बताये गये योगाभ्यास के माध्यम से समाधि प्राप्त करके समस्त अविद्या के संस्कारों को नष्ट करके ही मिलती है।

प्रश्न : मुक्ति में जीवात्मा की क्या स्थिति होती है, वह कहाँ रहता है? बिना शरीर इन्द्रियों के कैसे चलता, खाता, पीता है?

उत्तर : मुक्ति में जीवात्मा स्वतन्त्र रूप से समस्त ब्रह्माण्ड में भ्रमण करता है और ईश्वर के आनन्द से आनन्दित रहता है तथा ईश्वर की सहायता से अपनी स्वाभाविक शक्तियों से घूमने फिरने का काम करता है। मुक्त अवस्था में जीवात्मा को शरीरधारी जीव की तरह खाने पीने की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रश्न : जीवात्मा की सांसारिक इच्छाएँ कब समाप्त होती हैं?

उत्तर : जब ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है और संसार के भोगों से वैराग्य हो जाता है तब जीवात्मा की संसार के भोग पदार्थ को प्राप्त करने की इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं।

प्रश्न : जीवात्मा वास्तव में क्या चाहता है?

उत्तर : जीवात्मा पूर्ण और स्थायी सुख, शान्ति, निर्भयता और स्वतन्त्रता चाहता है।

प्रश्न : भोजन कौन खाता है शरीर या जीवात्मा?

उत्तर : केवल जड़ शरीर भोजन को खा नहीं सकता और केवल चेतन जीवात्मा को भोजन की आवश्यकता नहीं है शरीर में रहता हुआ जीवात्मा मन इन्द्रियादि साधनों से कार्य लेने के लिए भोजन खाता है।

प्रश्न : एक शरीर में एक ही जीवात्मा रहता है या अनेक भी रहते हैं?

उत्तर : एक शरीर में कर्त्ता और भोक्ता एक ही जीवात्मा रहता है अनेक जीवात्माएँ नहीं रहते। हाँ, दूसरे शरीर से युक्त दूसरा जीवात्मा तो किसी शरीर में रह सकता है, जैसे माँ के गर्भ में उसका बच्चा।

प्रश्न : जीवात्मा शरीर में व्यापक है या एकदेशी (एक स्थानीय)?

उत्तर : शरीर में जीवात्मा एकदेशी है व्यापक नहीं, यदि व्यापक होवे तो शरीर के घटने बढ़ने के कारण यह नित्य नहीं रह पायेगा।

प्रश्न : जीव की परम उन्नति, सफलता क्या है?

उत्तर : जीवात्मा की परम उन्नति आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करके परम शान्तिदायक मोक्ष को प्राप्त करना है।

प्रश्न : क्या जीवात्मा को प्राप्त होने वाले सुख दुःख अपने ही कर्मों के फल होते हैं? या बिना ही कर्म किए दूसरों के कर्मों के कारण भी सुख दुःख मिलते हैं?

उत्तर : जीवात्मा को प्राप्त होने वाले सुख दुःख अपने कर्मों के फल होते हैं किन्तु अनेक बार दूसरे के कर्मों के कारण भी परिणाम प्रभाव के रूप में (फल रूप में नहीं) सुख दुःख प्राप्त हो जाते हैं।

प्रश्न : किन लक्षणों के आधार पर यह कह सकते हैं कि किस व्यक्ति ने जीवात्मा का साक्षात्कार कर लिया है?

उत्तर : मन, इन्द्रियों पर अधिकार करके सत्यधर्म न्यायाचरण के माध्यम से शुभ कर्मों को ही करना और असत्य अधर्म के कर्मों को न करना तथा सदा शान्त, सन्तुष्ट और प्रसन्न रहना इस बात का ज्ञापक होता है कि इस व्यक्ति ने आत्मा का साक्षात्कार कर लिया है।

संसार (सृष्टि)

प्रश्न : एक सृष्टि (संसार) की आयु कितनी होती है?

उत्तर : एक सृष्टि (संसार) की आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष होती है।

प्रश्न : सृष्टि (संसार) की आयु किनसे मापी जाती है व उनकी आयु कितनी होती है?

उत्तर : सृष्टि (संसार) की आयु सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग से मापी जाती है। इनकी आयु निम्नलिखित है–

युग	**वर्ष**
सतयुग–	१७,२८,००० वर्ष
त्रेतायुग–	१२,९६,००० वर्ष
द्वापरयुग–	८,६४,००० वर्ष
कलियुग–	४,३२,००० वर्ष

एक चतुर्युगी = ४३,२०,००० (तिरालिस लाख बीस हजार वर्ष)

प्रश्न : एक सृष्टि में कुल कितनी चतुर्युगी होती है?

उत्तर : एक सृष्टि में कुल एक हजार चतुर्युगी होती है।

प्रश्न : एक सृष्टि में कितने मन्वन्तर होते हैं?

उत्तर : एक सृष्टि में चौदह मन्वन्तर होते हैं।

प्रश्न : वर्तमान में कौन सा मन्वन्तर चल रहा है व इसका नाम क्या है?

उत्तर : वर्तमान में सातवाँ मन्वन्तर चल रहा है, इसका नाम वैवस्वत मन्वन्तर है।

प्रश्न : एक मन्वन्तर में कितनी चतुर्युगी होती है व वर्तमान में कौन सी चतुर्युगी चल रही है?

उत्तर : एक मन्वन्तर में इकहत्तर चतुर्युगी होती है तथा वर्तमान में अट्ठाइसवीं चतुर्युगी चल रही है।

प्रश्न : वर्तमान कलियुग के कितने वर्ष बीत चुके हैं?

उत्तर : विक्रम संवत् २०६८ (ई.स. २०११) में वर्तमान कलियुग के ५१११ वर्ष बीत चुके हैं।

प्रश्न : आगामी सतयुग का आरंभ कितने वर्षों के बाद होगा?

उत्तर : आगामी सतयुग का आरंभ ४,२६,८८९ वर्षों के बाद होगा।

प्रश्न : सृष्टि का नववर्ष किस दिन बदलता है?

उत्तर : सृष्टि का नववर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा (प्रथमा) के दिन बदलता है।

प्रश्न : वर्तमान सृष्टि की आयु कितनी हो चुकी है?

उत्तर : वर्तमान सृष्टि की आयु १ अरब ९६ करोड़, ८ लाख, ५३ हजार १११ वर्ष हो चुकी है। (विक्रम संवत् २०६८, ई.स. २०११ में)

प्रश्न : क्या काल के कारण धर्म-अधर्म होते हैं जैसे कि सुनने में आता है कलियुग में पाप कर्म बढ़ जाते हैं?

उत्तर : नहीं, काल के कारण धर्म-अधर्म नहीं होते हैं। प्रत्येक काल में धर्म और अधर्म दोनों की प्रवृतियाँ चलती हैं।

प्रश्न : सृष्टि (संसार) के प्रारम्भ में मनुष्यों को किसने उत्पन्न किया और कैसे उत्पन्न किया?

उत्तर : सृष्टि (संसार) के प्रारम्भ में ईश्वर ने पृथ्वी के कणों से रज-वीर्य आदि धातु बनाई उसे मिलाकर पञ्चभौतिक अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन द्रव्यों से शरीर बनाकर, धरती के अन्दर से हजारों की संख्या में नवयुवक और नवयुवतियों को एक साथ उत्पन्न किया, जो शरीर से तो बलिष्ठ थे, किन्तु उनको बहुत ही कम ज्ञान था।

प्रश्न : फिर उन मनुष्यों को ज्ञान कैसे हुआ?

उत्तर : ईश्वर ने जो हजारों की संख्या में मनुष्यों को उत्पन्न किया था, उनमें से सर्वाधिक पवित्रात्माएँ जो-जो थीं, उनको चुना और उनसे समाधि लगवा करके ईश्वर ने उनको ज्ञान दिया। वहीं से गुरु परम्परा चली और सब मनुष्यों को ज्ञान हुआ।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ओ३म् करो बेड़ा पार है।।

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या के जीवनकाल में उनकी प्रेरणा से प्रकाशित साहित्य–

१. विश्वकल्याण निधि	२०५२-१९९५
२. विश्वकल्याण निधि (द्वितीय संस्करण)	२०५७-२०००
३. शतहस्त समाहार सहस्र हस्त संकिर	२०६०-२००४
४. वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण आर्य (आर्य जगत् की दिव्य विभूति)	२०६४-२००७
५. विश्व कल्याण दिव्य भजनमाला (२००० पृष्ठ)	२०६५-२००९

आपकी पुण्य स्मृति में वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य द्वारा प्रकाशित साहित्य–

१. गृहोद्यान के दो माली	२०६६-२००९
२. आर्यों के नित्यकर्म	२०६६-२०१०
३. मानवता पर कलंक भ्रूणहत्या	२०६८-२०१०
४. निर्धनों के लिए ४०० फ्लैटों का प्रोजेक्ट	२०६८-२०१०

वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला :-

(विभिन्न विषयों पर आर्य जगत् के विद्वानों द्वारा ट्रेक्ट लेखन २०६८-२०११)

१. ईश्वर-जीव-प्रकृति	आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य
२. गुलदस्ता	दोमादर लाल मूंधड़ा
३. जीवन का अन्तिम लक्ष्य–मोक्ष	स्वामी ऋतस्पति परिव्राजक
४. ईश्वर और जीव	डॉ. सुदर्शन देव आचार्य
५. प्रकृति	आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु
६. वेद पढ़ें - आगे बढ़ें	डॉ. कमलनारायण वेदाचार्य
७. स्तुति प्रार्थना व उपासना का यथार्थ स्वरूप	स्वामी अमृतानन्द सरस्वती
८. आधुनिक भारत की सच्ची सन्त	आचार्य सुखदेव 'आर्य तपस्वी'
९. सुख-शान्ति के उपाय	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
१०. वैदिक सूक्त	आचार्य राहुलदेव शास्त्री
११. भागवत् कथा	आचार्य सोमदेव शास्त्री
१२. फूलझड़ियाँ	वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य

आपकी पुण्य स्मृति में प्रकाशित होने वाला साहित्य–

(क) वानप्रस्था गुलाबी देवी आर्या दिव्य स्मृति ग्रन्थमाला में अन्य कई ट्रेक्ट

(ख) भारत की सच्ची सन्त आदर्श नारी वानप्रस्था गुलाबी देवीजी की जीवन-यात्रा